॥ श्री गणेशाय नमः ॥

पितृ-कर्म एवं

श्राद्ध-मीमांसा

पितृ दोष और श्राद्ध से जुड़े आपके सभी सवालों के शास्त्रीय उत्तर

पितरों की कृपा पाने का सरल और प्रामाणिक मार्ग



डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

सात पीढ़ियों की शास्त्र-परम्परा

नया संस्करण · पितृपक्ष 2026 की वीडियो-चर्चा सहित

हरिहर स्वामी करपात्री धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा प्रस्तुत

drgyanendrasharma.in

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

पितृ-कर्म एवं श्राद्ध-मीमांसा

पितृ दोष और श्राद्ध से जुड़े आपके सभी सवालों के शास्त्रीय उत्तर

डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

हरिहर स्वामी करपात्री धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा प्रस्तुत

नया संस्करण · पितृपक्ष 2026 की वीडियो-चर्चा सहित

WhatsApp 9058834744 · drgyanendrasharma.in

अनुक्रम

इस पुस्तक में

परिचय डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा जी का परिचय 4

भूमिका भूमिका 7

अध्याय 1 श्राद्ध — अर्थ, अंग और प्रकार 9

अध्याय 2 अधिकार, तिथि और नियम 14

अध्याय 3 श्राद्ध का महत्व और पितरों का स्वरूप 23

अध्याय 4 पितृ दोष — कारण, लक्षण और शांति 27

अध्याय 5 ब्राह्मण, भोजन और सामग्री 31

अध्याय 6 श्राद्ध में वर्ज्य — निषिद्ध बातें 37

अध्याय 7 पितृपक्ष चर्चा — वीडियो से 43

परिशिष्ट शास्त्रीय मूल पाठ 89

उपसंहार उपसंहार 120

परिचय

डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा जी का परिचय



डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा जी एक प्रतिष्ठित सनातन धर्माचार्य, संस्कृत विद्वान और कर्मकांड विशेषज्ञ हैं, जिन्होंने परंपरागत वैदिक ज्ञान को आधुनिक समाज तक पहुँचाने का संकल्प लिया है। उनकी शिक्षाओं और मार्गदर्शन को आज 3 करोड़ से अधिक लोग सोशल मीडिया पर सुन और देख चुके हैं।

बचपन से ही गुरुकुल परंपरा में शिक्षित डॉ. शर्मा जी ने सांस्कृतिक, दार्शनिक और शास्त्रीय विद्या में गहरी पकड़ बनाई। वे श्री संगवेद संस्कृत महाविद्यालय, नरवर-नरोरा एवं श्री भागीरथी संस्कृत विद्यालय, रामघाट से जुड़े रहे हैं और शिक्षा के क्षेत्र में नई पीढ़ी को धर्म, संस्कृति और संस्कृत साहित्य से जोड़ने का कार्य करते रहे हैं।

उनकी प्रमुख विशेषताएँ

- **सजीव संवाद शैली —** डॉ. शर्मा जी अपने व्याख्यानों और वीडियो के माध्यम से कठिन धार्मिक विषयों को सरल भाषा में समझाते हैं।
- **गहन शास्त्रीय ज्ञान —** वे वेद, उपनिषद, पुराण और स्मृतियों के प्रामाणिक संदर्भ प्रस्तुत करते हैं।
- **डिजिटल धर्मप्रचारक —** सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर सक्रिय रहकर लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित कर रहे हैं।

प्रमुख विषय जिन पर वे मार्गदर्शन देते हैं

- श्राद्ध, तर्पण और पितृ दोष की शांति
- कुलदेवी और कुल-परंपरा से संबंधित शास्त्रीय प्रश्न
- कर्मकांड और संस्कार (विवाह, उपनयन, गृह प्रवेश आदि)
- शास्त्रार्थ और धार्मिक विमर्श

◆ वैदिक ज्योतिष एवं आध्यात्मिक समाधान

डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा जी का उद्देश्य है कि हर व्यक्ति अपने धर्म, पूर्वजों और परंपराओं को समझे और सही विधि से उनका पालन करे। उनकी शिक्षाएँ न केवल धर्म को जीवित रखती हैं बल्कि समाज में आध्यात्मिक संतुलन और पारिवारिक सुख-शांति को भी स्थापित करती हैं।

भूमिका

भूमिका

सनातन धर्म में पितरों का स्थान देवताओं के समान ही महत्वपूर्ण माना गया है। हमारे पूर्वज, जिन्होंने हमें यह जीवन दिया, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने और उनकी आत्मा की शांति के लिए श्राद्ध और तर्पण जैसे कर्मकांडों का विधान शास्त्रों में किया गया है। पुत्र का यह परम धर्म है कि वह अपने पितरों का कल्याण करे, ताकि वे अधोगति से मुक्त होकर पितृलोक या स्वर्ग में स्थान प्राप्त करें।

हालाँकि, आज के आधुनिक समय में इन परंपराओं को लेकर समाज में कई तरह की भ्रांतियाँ और प्रश्न उत्पन्न हो गए हैं। जानकारी के अभाव में लोग अक्सर ऐसी विधियाँ अपना लेते हैं जो शास्त्रसम्मत नहीं होतीं, जिससे उन्हें पूर्ण फल की प्राप्ति नहीं हो पाती। यह ई-बुक इन्हीं शंकाओं और प्रश्नों का समाधान करने का एक प्रयास है।

इस पुस्तक में टीम ने विभिन्न स्रोतों (गुरु जी के वीडियो) से प्राप्त जानकारी के आधार पर श्राद्ध, पितृ दोष, तर्पण, पिंडदान और कर्मकांड से जुड़े लगभग हर पहलू पर प्रकाश डाला है। हमारा उद्देश्य है कि हर व्यक्ति इन महत्वपूर्ण धार्मिक क्रियाओं के पीछे के शास्त्रीय तर्क और विधान को

सरल भाषा में समझ सके, ताकि वे अपने पितरों के प्रति अपने कर्तव्यों का सही ढंग से निर्वहन कर सकें। यह पुस्तक आपके मन में उठने वाले सभी प्रश्नों का एक प्रामाणिक और विस्तृत उत्तर देने का प्रयास करेगी।

इस नए संस्करण में —

पूरी पुस्तक नए रूप में, प्रश्न विषय-क्रम से सात अध्यायों में, और पितृपक्ष 2026 की डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा की वीडियो-चर्चा पर आधारित एक पूरा नया अध्याय — हर लेख के साथ वीडियो की कड़ी।

अध्याय 1

श्राद्ध — अर्थ, अंग और प्रकार

श्राद्ध क्या है, उसके अंग कौन-से हैं, और शास्त्रों में उसके कितने भेद बताए गए हैं।

प्रश्न 1

श्राद्ध का शाब्दिक और व्यवहारिक अर्थ क्या है?

शाब्दिक अर्थ — "श्राद्ध" शब्द "श्रद्धा" से निकला है। यानी श्रद्धा, विश्वास और पितरों के प्रति आदर भाव से किया गया कर्म।

व्यवहारिक अर्थ — मृत पिता, पितामह, प्रपितामह आदि पितरों को प्रसन्न करने और उनकी तृप्ति के लिए अन्न, पिंड, जल और दान का जो विधान शास्त्रों में है, वही श्राद्ध कहलाता है।

प्रश्न 2

श्राद्ध के मुख्य अंग कौन-कौन से होते हैं?

श्राद्ध में तीन मुख्य क्रियाएँ होती हैं —

1. **अनुकरण (होम) —** अग्नि में आहुति देकर देवताओं को तृप्त करना।
2. **पिंडदान —** चावल आदि से बने पिंड द्वारा पितरों को तृप्त करना।

3. **ब्राह्मण भोजन —** पितरों का स्थान लेकर योग्य ब्राह्मणों को आदरपूर्वक भोजन कराना।

अगर कोई सब करने में सक्षम न हो तो केवल ब्राह्मण भोजन करना भी श्राद्ध माना जाता है।

प्रश्न 3

वेदों के अनुसार श्राद्ध की परिभाषा में क्या अंतर है?

- **यजुर्वेदी —** पिंडदान को श्राद्ध मानते हैं।
- **ऋग्वेदी (बह्वृच) —** ब्राह्मण पूजन को श्राद्ध मानते हैं।
- **सामवेदी —** पिंडदान और ब्राह्मण भोजन, दोनों को श्राद्ध मानते हैं।

प्रश्न 4

पार्वण श्राद्ध क्या है? इसके कितने प्रकार हैं?

परिभाषा — जब पिता, पितामह और प्रपितामह — तीन पीढ़ियों के लिए तीन पिंड अर्पित किए जाते हैं, उसे पार्वण श्राद्ध कहते हैं।

प्रकार —

1. **एकोद्दिष्ट —** प्रतिवर्ष मृत्यु तिथि पर।
2. **द्वि-पार्वण —** अमावस्या, महालय या विशेष काल में।
3. **त्रि-पार्वण —** अन्वष्टका श्राद्ध (माता, पिता और मातामह हेतु)।

प्रश्न 5

एकोद्दिष्ट श्राद्ध क्या है?

जब किसी एक मृतक के लिए केवल एक ही पिंड अर्पित कर श्राद्ध किया जाए, तो वह एकोद्दिष्ट श्राद्ध कहलाता है। इसके तीन प्रकार बताए गए हैं —

1. **नव संज्ञक —** मृत्यु के दिन से दसवें दिन तक।
2. **नवमिश्र संज्ञक —** ग्यारहवें दिन से एक वर्ष तक।
3. **पुराण संज्ञक —** एक वर्ष बाद का वार्षिक श्राद्ध।

प्रश्न 6

नान्दी श्राद्ध क्या होता है?

जब कोई शुभ कार्य (जैसे विवाह, पुत्र जन्म आदि) किया जाता है, तब देवता और पितरों को स्मरण कर उनकी प्रसन्नता के लिए जो श्राद्ध किया जाता है, वह नान्दी श्राद्ध कहलाता है। इसे मंगल श्राद्ध भी कहते हैं।

प्रश्न 7

सपिण्डीकरण श्राद्ध क्या है?

मृत्यु के बारहवें दिन जो श्राद्ध किया जाता है, जिसमें नव मृत आत्मा का पिंड पितरों के पिंडों के साथ मिलाया जाता है, वह सपिण्डीकरण श्राद्ध

कहलाता है। इसका अर्थ है — नए मृतक को पितरों की श्रेणी में सम्मिलित करना।

प्रश्न 8

श्राद्ध के कितने प्रकार बताए गए हैं?

मुख्य रूप से श्राद्ध तीन प्रकार के माने जाते हैं —

1. **नित्य श्राद्ध —** अमावस्या, मासिक श्राद्ध आदि, जो नियमित किए जाते हैं।
2. **नैमित्तिक श्राद्ध —** विशेष कारण से, जैसे ग्रहण, संक्रांति, अशुभ स्वप्न आदि पर।
3. **काम्य श्राद्ध —** किसी विशेष फल की प्राप्ति के लिए, जैसे आयु, संतान या समृद्धि की कामना से।

प्रश्न 9

श्राद्ध के लिए शुभ समय कौन-सा होता है?

श्राद्ध का श्रेष्ठ समय दिन का तीसरा भाग यानी अपराह्न (दोपहर बाद का समय) है। शास्त्रों में कहा गया है —

अपरेऽह्ननि पितरोऽन्यत्र देवा

देवता पूर्वाह्न में और पितर अपराह्न में प्रसन्न होते हैं।

प्रश्न 10

श्राद्ध के लिए कौन-कौन से अवसर विशेष माने जाते हैं?

- अमावस्या तिथि
- संक्रांति
- ग्रहण (सूर्य / चंद्र)
- व्यतीपात योग
- महातीर्थ की प्राप्ति
- मृतक की तिथि
- अशुभ स्वप्न
- नवान्न की प्राप्ति

इनमें से विशेष रूप से भाद्रपद माह का महालय पक्ष (कृष्णपक्ष) श्रेष्ठ माना गया है।

नमूना यहाँ समाप्त

आगे की पुस्तक में

अध्याय 2	अधिकार, तिथि और नियम
अध्याय 3	श्राद्ध का महत्व और पितरों का स्वरूप
अध्याय 4	पितृ दोष — कारण, लक्षण और शांति
अध्याय 5	ब्राह्मण, भोजन और सामग्री
अध्याय 6	श्राद्ध में वर्ज्य — निषिद्ध बातें
अध्याय 7	पितृपक्ष चर्चा — वीडियो से (10 लेख)
परिशिष्ट	परिशिष्ट — शास्त्रीय मूल पाठ

पूरी पुस्तक — 122 पन्ने · हिन्दी PDF

₹199

drgyanendrasharma.in/ebooks

भुगतान होते ही तुरंत download